हफ़्तावार रिसाला : 197
Weekly Booklet : 197

अमीरे अहले सुन्नत دامت برکاتہم العالیہ की किताब
"ग़ीबत की तबाह कारियां" की एक किस्त

Badshah ki Sadi Hui Laash (Hindi)

बादशाह की सड़ी हुई लाश

सफ़हात 19

- ग़ीबत नेकियों को जला देती है 01
- ग़ीबत सुनना भी हराम है 07
- हज्जाज बिन यूसुफ़ की ग़ीबत से भी परहेज़ 13
- बक बक की आदत कुफ़्र में डाल सकती है 18

शैख़े तरीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, हज़रते अल्लामा मौलाना अबू बिलाल
मुहम्मद इल्यास अत्तार क़ादिरी रज़वी دامت برکاتہم العالیہ

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَالصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ ط

اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ط بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ط

किताब पढ़ने की दुआ़

अज़ : शैखे़ त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** रज़वी دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ

दीनी किताब या इस्लामी सबक़ पढ़ने से पहले ज़ैल में दी हुई दुआ़ पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा। दुआ़ येह है :

اَللّٰھُمَّ افْتَحْ عَلَیْنَا حِکْمَتَكَ وَانْشُرْ
عَلَیْنَا رَحْمَتَكَ یَا ذَاالْجَلَالِ وَالْاِکْرَام

तरजमा : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हम पर इ़ल्मो ह़िक्मत के दरवाज़े खोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़ज़मत और बुज़ुर्गी वाले।

(مُسْتَطْرَف ج ۱ ص ٤٠ دارالفکر بیروت)

नोट : अव्वल आख़िर एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये।

त़ालिबे ग़मे मदीना
व बक़ीअ़
व मग़्फ़िरत

13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

बादशाह की सड़ी हुई लाश

येह रिसाला (**बादशाह की सड़ी हुई लाश**)

शैखे़ त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** रज़वी دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ ने **उर्दू** ज़बान में तह़रीर फ़रमाया है।

ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी) ने इस रिसाले को **हिन्दी** रस्मुल ख़त़ में तरतीब दे कर पेश किया है और मक्तबतुल मदीना से शाएअ़ करवाया है। इस में अगर किसी जगह कमी बेशी पाएं तो ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट को (ब ज़रीअ़ए मक्तूब, ईमेइल या SMS) मुत्त़लअ़ फ़रमा कर सवाब कमाइये।

राबिता : ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी)

मक्तबतुल मदीना, सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने,

तीन दरवाज़ा, अह़मदआबाद-1, गुजरात

MO. **98987 32611** • Email : **hind.printing92@gmail.com**

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ ط
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

येह मज़्मून "ग़ीबत की तबाह कारियां" के सफ़हा 161 ता 176 से लिया गया है।

बादशाह की सड़ी हुई लाश

दुआए अ़त्तार : **या अल्लाह** पाक ! जो कोई 20 सफ़हात का रिसाला : **"बादशाह की सड़ी हुई लाश"** पढ़ या सुन ले, उस के सारे गुनाह मुआ़फ़ फ़रमा और उसे अपना मक़बूल बन्दा बना कर बे हिसाब मग़्फ़िरत से नवाज़ दे। اٰمِيْن بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِيْن صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

ह़ज़रते अ़ल्लामा **मज्दुद्दीन फ़ीरोज़आबादी** رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه से मन्क़ूल है : जब किसी मजलिस में (या'नी लोगों में) बैठो और कहो : بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ وَصَلَّى اللّٰهُ عَلٰى مُحَمَّد तो **अल्लाह** पाक तुम पर एक फ़िरिश्ता मुक़र्रर फ़रमा देगा जो तुम को **ग़ीबत** से बाज़ रखेगा। और जब मजलिस से उठो तो कहो : بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ وَصَلَّى اللّٰهُ عَلٰى مُحَمَّد तो फ़िरिश्ता लोगों को तुम्हारी **ग़ीबत** करने से बाज़ रखेगा। (اَلْقَوْلُ الْبَدِيع ص۲۷۸)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

ग़ीबत नेकियों को जला देती है

आह ! हमारे मुआ़शरे की बरबादी ! अफ़्सोस सद करोड़ अफ़्सोस ! **ग़ीबत** करने और सुनने की आ़दत ने हर त़रफ़ तबाही मचा रखी है। मन्क़ूल है : आग भी ख़ुश्क लकड़ियों को इतनी जल्दी नहीं जलाती जितनी जल्दी **ग़ीबत** बन्दे की **नेकियों को जला** कर रख देती है। (اِحیاءُ الْعُلوم ج۳ ص۱۸۳)

मेरी नेकियां कहां गईं ?

ऐ आ़शिक़ाने रसूल ! **ग़ीबत** की तबाह कारियों में से येह भी है कि इस की वज्ह से नेकियां ज़ाएअ़ हो जाती हैं जैसा कि **अल्लाह** पाक की अ़त़ा से ग़ैब की ख़बरें देने वाले प्यारे प्यारे आक़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : बेशक क़ियामत के रोज़ इन्सान के पास उस का खुला हुवा नामए आ'माल लाया जाएगा, वोह कहेगा मैं ने जो फुलां फुलां नेकियां की थीं वोह कहां गईं ? कहा जाएगा : तूने जो **ग़ीबतें** की थीं इस वज्ह से मिटा दी गईं हैं। (اَلتَّرغِيب وَالتَّرهِيب ج٣ ص ٣٣٢ حديث ٣٠)

क़ियामत में एक एक लफ़्ज़ का ह़िसाब होगा

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! आह ! बरोज़े क़ियामत एक एक लफ़्ज़ का ह़िसाब होगा। ग़ौर कीजिये ! इस फ़ानी दुन्या में "उ़म्रे अ़ज़ीज़ के चार दिन" गुज़ारने के बा'द हमें अंधेरी क़ब्र में उतार दिया जाएगा और फिर उस की वह़्शत आमेज़ तन्हाइयों में न जाने कितना अ़र्सा हमारा क़ियाम होगा। फिर जब अ़र्सए मह़शर में ह़िसाबो किताब के लिये ह़ाज़िरी होगी तो अपना हर हर अ़मल अपने नामए आ'माल में लिखा हुवा दिखाई देगा जैसा कि कुरआने मजीद, फ़ुरक़ाने ह़मीद के पारह 30 **सूरतुज़्ज़िल्ज़ाल** आयत नम्बर 6 ता 8 में इर्शाद होता है :

يَوْمَىٕذٍ يَّصْدُرُ النَّاسُ اَشْتَاتًا ﳔ لِّيُرَوْا اَعْمَالَهُمْ ؕ﴿۶﴾ فَمَنْ يَّعْمَلْ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ خَيْرًا يَّرَهٗ ؕ﴿۷﴾ وَ مَنْ يَّعْمَلْ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ شَرًّا يَّرَهٗ ﴿۸﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : उस दिन लोग अपने रब की त़रफ़ फिरेंगे कई राह हो कर ताकि अपना किया दिखाए जाएं तो जो एक ज़र्रा भर भलाई करे उसे देखेगा और जो एक ज़र्रा भर बुराई करे उसे देखेगा।

आह ! **अल्लाहु** क़दीर **की ख़ुफ़्या तदबीर** हमारे बारे में क्या है कुछ नहीं मा'लूम, आया बारगाहे रब्बुल इ़ज़्ज़त से परवानए मग़्फ़िरत जारी होगा या (مَعَاذَاللہ) दुख़ूले जहन्नम का हुक्म मिलेगा इस का कुछ नहीं पता। (نَسْئَلُ الْعَافِيَة या'नी हम आ़फ़िय्यत का सुवाल करते हैं)

गर तू नाराज़ हुवा मेरी हलाकत होगी ! हाए ! मैं नारे जहन्नम में जलूंगा या रब!
अ़फ़्व कर और सदा के लिये राज़ी हो जा गर करम कर दे तो जन्नत में रहूंगा या रब!

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ عَلٰى مُحَمَّد
تُوبُوا اِلَى الله! اَسْتَغْفِرُالله
صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ عَلٰى مُحَمَّد

जिस की ग़ीबत की जाए वोह फ़ाएदे में

जब आप को मा'लूम हो कि मेरी **ग़ीबत** की गई है तो सीख़ पा होने (या'नी ग़ुस्से में आ जाने) के बजाए **सब्रो तह़म्मुल** से काम लीजिये और यूं भी नुक़्सान उसी का होता है जिस ने **ग़ीबत** की, जिस की **ग़ीबत** की गई वोह तो फ़ाएदे ही में रहता है चुनान्चे ह़ज़रते सय्यिदुना अबू उमामा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ फ़रमाते हैं : बन्दे को क़ियामत के दिन जब उस का नामए आ'माल दिया जाएगा तो वोह उस में ऐसी नेकियां देखेगा जो इस ने न की होंगी, अ़र्ज़ करेगा : ऐ मेरे रब ! येह मेरे लिये कहां से आ गईं ? कहा जाएगा : येह वोह नेकियां हैं जो लोगों ने तुम्हारी **ग़ीबत** की थी।

(تنبیهُ الْمُغتَرّین ص ۱۹۲)

मेरी मां मेरी नेकियों की ज़ियादा ह़क़दार है

ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन मुबारक رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ के सामने किसी ने **ग़ीबत** का तज़्किरा किया तो फ़रमाया : अगर मैं किसी की **ग़ीबत** करना दुरुस्त जानता तो अपनी मां की **ग़ीबत** करता क्यूं कि मेरी

नेकियों की सब से ज़ियादा हक़दार वोही है। (مِنْهاجُ الْعابِدِين ص٦٥)

मां के पूरे हुक़ूक़ अदा नहीं किये जा सकते

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! दिल को चोट लगाने के लिये इस **हिकायत** में इब्रत के काफ़ी **मदनी फूल** हैं, गोया फ़रमा रहे हैं कि नेकियां चूंकि अनमोल हैं और मां के हुक़ूक़ से भी सुबुक दोशी मुम्किन नहीं लिहाज़ा अगर नेकियां किसी को देनी ही हों तो इन्सान अपनी मां ही को क्यूं न दे दे ! इस **हिकायत** से मां की अहम्मिय्यत का भी पता चलता है। बहर हाल **ग़ीबत** में कोई भलाई नहीं इस में रुस्वाई ही रुस्वाई है।

ऐ प्यारे ख़ुदा अज़ पए सुल्ताने मदीना ग़ीबत की नुहूसत से मेरी जान छुड़ा दे

आधे गुनाह मुआफ़

हज़रते सय्यिदुना अ़ता ख़ुरासानी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : अगर कोई आप की **ग़ीबत** करे तो परेशान न हों, **ग़ीबत** करने वाला ना दानिस्ता तौ़र पर आप ही के साथ भलाई कर रहा है ! हमें येह बात पहुंची है कि जिस की एक बार **ग़ीबत** की जाए उस के निस्फ़ (या'नी आधे) गुनाह मुआफ़ हो जाते हैं। (تَنبِيهُ الْمُغتَرِّيْن ص١٩٤)

सारी रात की इबादत और ग़ीबत

एक बार हज़रते सय्यिदुना हातिम असम رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه की नमाज़े तहज्जुद फ़ौत हो गई तो ज़ौजए मोहतरमा ने आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه को इस पर आ़र (या'नी ग़ैरत) दिलाई। आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने फ़रमाया : गुज़श्ता शब कुछ अफ़राद सारी रात नवाफ़िल में मसरूफ़ रहे हैं और सुब्ह उन्हों ने मेरी **ग़ीबत** की है तो उन की उस रात की इबादत बरोज़े क़ियामत मेरे मीज़ाने अ़मल (या'नी आ'माल तुलने की तराज़ू) में रख दी जाएगी ! (مِنْهاجُ الْعابِدِين ص٦٦)

100 बरस की नफ़्ली इबादत और एक ग़ीबत

ऐ आशिक़ाने औलिया ! बुज़ुर्गाने दीन رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِم के फ़रामीन में हिक्मत के बे शुमार **मदनी फूल** होते हैं, मज़्कूरा **हिकायत** में **ग़ीबत** करने वालों को बड़े अछूते अन्दाज़ में चोट लगाई गई है ताकि वोह **ग़ीबतें** कर के अपनी इबादतें दाव पर न लगाएं, इस हिकायत से येह मदनी फूल भी मिला कि जो आदमी ख़्वाह सारी सारी रात इबादात में गुज़ारे मगर **ग़ीबतों** से बाज़ न आए तो उस की इबादात व रियाज़ात उन लोगों को दे दी जाएंगी जिन की **ग़ीबतें** और हक़ तलफ़ियां की हैं ! सच पूछो तो 100 बरस की नफ़्ली इबादत के मुक़ाबले में सिर्फ़ एक बार की **ग़ीबत** ज़ियादा ख़तरनाक है क्यूं कि अगर कोई शख़्स ज़िन्दगी में कभी भी नफ़्ली इबादत नहीं करेगा तब भी क़ियामत में इस पर उस की गिरिफ़्त (या'नी पकड़) नहीं है जब कि **ग़ीबत** में रब्बुल इ़ज़्ज़त की मा'सियत (या'नी ना फ़रमानी) और सवाबे आख़िरत की इज़ाअ़त (या'नी ज़ाएअ़ होना) और हलाकत है। दुन्या की सारी दौलत का हाथ से जाते रहना अगर्चे नफ़्स पर गिरांबार है मगर हक़ीक़त में बहुत छोटा नुक़्सान है और क़ियामत में "**एक नेकी**" भी अगर किसी को हक़ तलफ़ी के इवज़ देनी पड़ी तो ख़ुदा की क़सम येह बहुत बड़ा नुक़्सान है।

मीज़ां पे सब खड़े हैं आ'माल तुल रहे हैं रख लो भरम ख़ुदारा अ़त्तार क़ादिरी का

हाजत रवाई और बीमार पुर्सी की फ़ज़ीलत

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! **ग़ीबत** की बद ख़स्लत से जान छुड़ाइये, नेकियां बचाइये बल्कि ख़ूब बढ़ाइये, नेकियां बढ़ाने के मक्की मदनी नुस्ख़े अपनाइये और जन्नतुल फ़िरदौस के हक़दार बन जाइये,

سُبْحٰنَ اللہ ! कितने ख़ुश नसीब हैं वोह इस्लामी भाई और इस्लामी बहनें जो अपनी ज़बान को **नेकी की दा'वत**, सुन्नतों भरे **बयान** और ज़िक्रो दुरूद में लगाए रखते हैं। मुसल्मान की ह़ाजत रवाई करना कारे सवाब है नीज़ बीमार या परेशान मुसल्मान को तसल्ली देना भी **ज़बान** का अ़ज़ीमुश्शान इस्ति'माल है। चुनान्चे **ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह** इब्ने उ़मर رَضِیَ اللہُ عَنْہُمَا और **ह़ज़रते** सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللہُ عَنْہ से रिवायत है दोनों फ़रमाते हैं : जो अपने किसी मुसल्मान भाई की ह़ाजत रवाई के लिये जाता है **अल्लाह** पाक उस पर 75 **ह़ज़ार मलाएका** के ज़रीए़ साया फ़रमाता है, वोह फ़िरिश्ते उस के लिये दुआ़ करते हैं और वोह फ़ारिग़ होने तक रह़मत में ग़ोताज़न रहता है और जब वोह इस काम से फ़ारिग़ हो जाता है तो **अल्लाह** पाक उस के लिये एक ह़ज और एक उ़म्रे का सवाब लिखता है। और जिस ने मरीज़ की इ़यादत की **अल्लाह** पाक उस पर 75 **ह़ज़ार मलाएका** के ज़रीए़ साया फ़रमाएगा और घर वापस आने तक उस के हर क़दम उठाने पर उस के लिये एक नेकी लिखी जाएगी और उस के हर क़दम रखने पर उस का एक गुनाह मिटा दिया जाएगा और एक दरजा बुलन्द किया जाएगा, जब वोह मरीज़ के साथ बैठेगा तो रह़मत उसे ढांप लेगी और अपने घर वापस आने तक रह़मत उसे ढांपे रहेगी।

(معجم اوسط، 3/222، حدیث:4396)

जन्नत के दो जोड़े

जब किसी का बच्चा बीमार हो जाए, कोई बे रोज़गार या क़र्ज़दार हो जाए, ह़ादिसे का शिकार हो जाए, चोर या डाकू माल ले कर फ़िरार हो जाए, कारोबार में नुक़्सान से हमकनार हो जाए कोई चीज़ गुम हो जाने के

सबब बे क़रार हो जाए, अल ग़रज़ किसी त़रह़ की भी परेशानी से दो चार हो जाए उस की दिलजूई के लिये **ज़बान** चलाना बहुत बड़े सवाब का काम है चुनान्चे **ह़ज़रते** सय्यिदुना जाबिर رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ से रिवायत है कि अपने रब से हम गुनाह गारों को बख़्शवाने वाले प्यारे प्यारे आक़ा صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "जो किसी **ग़मज़दा** शख़्स से ता'ज़ियत करेगा **अल्लाह** पाक उसे तक़्वा का लिबास पहनाएगा और रूह़ों के दरमियान उस की रूह़ पर रह़मत फ़रमाएगा और जो किसी **मुसीबत ज़दा** से ता'ज़ियत करेगा **अल्लाह** पाक उसे जन्नत के जोड़ों में से दो ऐसे जोड़े पहनाएगा जिन की क़ीमत (सारी) दुन्या भी नहीं हो सकती।" (معجم اوسط، 6/429، حدیث:9292)

या ख़ुदा सदक़ा नबी का बख़्श मुझ को बे ह़िसाब नज़्ज़ो क़ब्रो ह़श्र में मुझ को न देना कुछ अ़ज़ाब

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ❀❀❀ صَلَّی اللّٰہُ علٰی مُحَمَّد

تُوبُوا اِلَی اللّٰہ! اَسْتَغْفِرُاللّٰہ

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ❀❀❀ صَلَّی اللّٰہُ علٰی مُحَمَّد

ग़ीबत सुनना भी ह़राम है

अल्लाह पाक के प्यारे प्यारे आख़िरी नबी मक्की मदनी, मुह़म्मदे अ़रबी صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने गाना गाने और गाना सुनने से और **ग़ीबत** करने और **ग़ीबत** सुनने से और चुग़ली करने और चुग़ली सुनने से मन्अ़ फ़रमाया। (جامع صغیر، ص560، حدیث:9378) ह़ज़रते अ़ल्लामा अ़ब्दुर्रऊफ़ मुनावी رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ फ़रमाते हैं : **ग़ीबत** सुनने वाला भी **ग़ीबत** करने वालों में से एक होता है। (فیض القدیر، 3/612، تحت الحدیث:3929)

ग़ीबत में शिर्कत के तमाम अन्दाज़ गुनाह हैं

ग़ीबत सुनने पर ख़ुश होना और इस की त़रफ़ तवज्जोह से कान

लगाना दिलचस्पी लेते हुए हां, हूं, हैं, जी वग़ैरा आवाज़ें निकालना भी **ग़ीबत** है। **ग़ीबत** सुनने वाले की इस हरकत से **ग़ीबत** करने वाले को मज़ीद तक़्विय़त मिलती है और वोह मज़ीद बढ़ चढ़ कर **ग़ीबत** करता है, इसी त़रह़ **ग़ीबत** सुन कर ख़ुशी और तअ़ज्जुब का इज़्हार भी गुनाह है मसलन ह़ैरत के साथ कहना : अरे ! येह ऐसा शख़्स है ! मैं तो इस को अच्छा आदमी समझता था। दिलचस्पी के साथ **ग़ीबत** सुनने, तअ़ज्जुब का इज़्हार करने, हां में हां मिलाने के अन्दाज़ में सर हिलाने वग़ैरा में **ग़ीबत** करने वाले की पज़ीराई और ह़ौसला अफ़्ज़ाई का सामान है बल्कि ऐसे मौक़अ़ पर बिला इजाज़ते शर्ई ख़ामोश रहने वाला भी **ग़ीबत** में शरीक ही माना जाएगा। (احیاء العلوم، 3/180 ماخوذا)

बादशाह की सड़ी हुई लाश

एक मर्तबा कुछ लोगों ने ह़ज़रते मैमून رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه के सामने एक **बादशाह** की बुराइयां बयान करना शुरूअ़ कर दीं, आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ख़ामोशी से सुनते रहे, ख़ुद उस के बारे में कोई अच्छी या बुरी बात नहीं की। जब रात सोए तो ख़्वाब में देखा कि उसी **बादशाह की सड़ी हुई बदबूदार लाश** आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه के सामने रखी है और एक आदमी कह रहा है : "इसे खाओ !" फ़रमाया : मैं इसे क्यूं खाऊं ? उस ने जवाब दिया : इस लिये कि तुम्हारे सामने इस **बादशाह की ग़ीबत** की गई थी। फ़रमाया : मगर मैं ने तो इस के बारे में कोई अच्छा या बुरा कलाम नहीं किया ! जवाब मिला : लेकिन तुम इस की **ग़ीबत** सुनने पर रिज़ा मन्द थे। (صفۃ الصفوۃ، 3/154 ملخصا)

ह़ज़रते ह़ज़्म رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : ह़ज़रते मैमून رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ख़ुद किसी की **ग़ीबत** करते न अपने सामने किसी को **ग़ीबत** करने देते बल्कि अगर कोई

ग़ीबत करने की कोशिश करता तो उसे मन्अ़ फ़रमा देते अगर वोह बाज़ आ जाता तो ठीक वरना आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه वहां से उठ खड़े होते।

(حِلْيَةُ الْاولياء ج۳ص۱۲۷رقم۳٤۱۸)

सियासी तब्सिरों की बैठकें

ऐ आ़शिक़ाने रसूल ! इस हि़कायत से मा'लूम हुवा कि सियासी क़ाइदीन, अरबाबे इक़्तिदार और हुक्मरान त़ब्क़े की **ग़ीबत** की भी खुली छूट नहीं। सद करोड़ अफ़्सोस ! आज कल शायद ही हमारी कोई निशस्त ऐसी हो जिस में किसी सियासी लीडर या वज़ीर या क़ौमी या सूबाई एसेम्बली के किसी रुक्न की इ़ज़्ज़त की धज्जियां न उड़ाई जाती हों। कभी वज़ीरे आ'ज़म हदफ़े तन्क़ीद होता है तो कभी सद्र, कभी वज़ीरे आ'ला की शामत आती है तो कभी गवर्नर की। मुख़्तलिफ़ लोगों के मुतअ़ल्लिक़ नाम बनाम ज़ोरदार मन्फ़ी (NEGATIVE) बह़सें की जातीं, जी भर कर कीचड़ उछाला जाता और एक से एक बुरे नाम रखे जाते हैं। ग़ौर से सुनिये ! रब्बे काएनात पारह 26 **सूरतुल हुजुरात** आयत नम्बर 11 में इर्शाद फ़रमाता है : ﴿وَلَا تَنَابَزُوْا بِالْاَلْقَابِؕ﴾ **तरजमए कन्ज़ुल ईमान :** और एक दूसरे के बुरे नाम न रखो।

फ़िरिश्ते ला'नत करते हैं

आ़शिकाने रसूल की मदनी तह़रीक **दा'वते इस्लामी** के मक्तबतुल मदीना की किताब, **''आंसूओं का दरिया''** सफ़ह़ा 246 ता 247 पर येह ह़दीसे पाक लिखी है : ह़ज़रते सईद बिन आ़मिर رَضِیَ اللهُ عَنْه से रिवायत है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का इर्शादे

हक़ीक़त बुन्याद है : जिस ने किसी मुसल्मान को उस के नाम के इलावा किसी लफ़्ज़ (या'नी बुरे नाम) से पुकारा उस पर मलाएका (फ़िरिश्ते) ला'नत भेजते हैं। (جامع صغیر، ص525، حدیث:8666)

अख़्बारी ख़बरों का ह़ाल बे ह़ाल

मनचले नौ जवानों की अक्सर मंडलियों (टोलियों) और बड़े बूढ़ों की कसीर बैठकों में हुक्मरानों और सियासी लीडरों के बारे में **ग़ीबतों,** तोह्मतों, बद गुमानियों और ऐब दरियों का वोह मन्हूस सिल्सिला चलता है कि اَلْاَمَان وَ الْحَفِيظ! फिर सितम बालाए सितम येह कि दलील भी किसी के पास कुछ नहीं होती ! शायद कोई कहे कि क्यूं नहीं हम ने फुलां अख़्बार में पढ़ा था, अब बिलफ़र्ज़ वोह अख़्बार फ़िल्मी अदाकाराओं की फ़ोह्श अदाओं की तस्वीरों से भरपूर इश्तिहारों, गन्दी ह़रकतों की जज़्बात भड़काने वाली (SEX APEALING) ख़बरों, छुप कर गुनाह करने वालों की बिला ज़रूरते शर्ई आबरू रेज़ियों, हुक्मरानों, सियासत दानों और मुआ़शरे के हर त़ब्क़े के मुसल्मानों की तज़्लीलों, तोह्मतों और इल्ज़ाम तराशियों और मरे हुए मुसल्मानों तक की **ग़ीबतों** से भरपूर रहता हो तो मेरे ख़याल में अगर कोई **वलिय्युल्लाह** भी ग़ीबतों और **गुनाहों भरी ख़बरों** से भरपूर और बे पर्दा औ़रतों की तस्वीरों से मा'मूर ऐसा **अख़्बार** पढ़ने में मश्ग़ूल हो तो शायद अपनी **विलायत** न बचा पाए ! बुराइयों से सरशार किसी ऐसे **अख़्बार** में छपी हुई "ऐब दरियों और ग़ीबतों भरी ख़बर" को दलील कैसे बनाया जा सकता है ! अगर ख़बर सच्ची भी थी तब भी बिला मस्लह़ते शर्ई किसी मुसल्मान की बुराई (छापने और)

बयान करने और इस त़रह़ की गुनाहों भरी ख़बर बिला इजाज़ते शर्ई पढ़ने की शरीअ़त ने कब इजाज़त दी है ! इसी को तो इस्लाम ने ऐ़ब दरी और **ग़ीबत** क़रार दे कर इस की भरपूर अन्दाज़ में ह़ौसला शिकनी फ़रमाई है।

कुत्तों की त़रह़ काटते और नोचते होंगे !

बहर ह़ाल ऐसी सोह़बतों और बैठकों को तर्क करना ज़रूरी है जिन में गुनाहों भरी बह़सें छिड़तीं, ह़ालाते ह़ाज़िरा पर फ़ुज़ूल तब्सरे होते, मुसल्मानों की इ़ज़्ज़तें पामाल होतीं और ख़ूब **ग़ीबतें** की जाती हैं। आ़शिकाने रसूल की मदनी तह़रीक **दा'वते इस्लामी** के मक्तबतुल मदीना की किताब, "**आंसूओं का दरिया**" सफ़ह़ा 253 पर है : एक बुज़ुर्ग رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं कि जब क़ियामत का दिन आएगा तो **अल्लाह** पाक की ना फ़रमानी के लिये मिल कर बैठने वाले और गुनाहों पर एक दूसरे की मदद करने वाले जम्अ़ होंगे, फिर वोह घुटनों के बल खड़े होंगे और एक दूसरे को **कुत्तों की त़रह़ काटते और नोचते होंगे,** येह वोह बद नसीब होंगे जो बिग़ैर तौबा किये दुन्या से रुख़्सत हुए होंगे।

(بحر الدموع، ص185)

मैं फ़ालतू बातों से रहूं दूर हमेशा चुप रहने का अल्लाह ! सलीक़ा तू सिखा दे

दुआ़ए क़ुनूत पढ़ने वाले अपना वा'दा निभाएं

ऐ आ़शिक़ाने आ'ला ह़ज़रत ! बुरी सोह़बतों से बचना बेह़द ज़रूरी है वरना आख़िरत तबाह हो सकती है। मेरे आक़ा **आ'ला ह़ज़रत,** इमामे अहले सुन्नत, इमाम अह़मद रज़ा ख़ान رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : शरीअ़ते मुत़ह्हरा ने नमाज़ में कोई ज़िक्र ऐसा नहीं रखा है जिस में "सिर्फ़

ज़बान'' से लफ़्ज़ निकाले जाएं और मा'ना मुराद न हों। (फ़तावा रज़विय्या, 29/567) तो आप की याद दिहानी के लिये अ़र्ज़ है कि **नमाज़े वित्र** में आप येह **दुआए क़ुनूत** तो पढ़ते ही होंगे जिस में है : وَنَخْلَعُ وَنَتْرُكُ مَنْ يَّفْجُرُكَ ؕ या'नी ''(या **अल्लाह**! हम) अलग करते हैं और छोड़ते हैं उस को जो तेरी ना फ़रमानी करे'' अगर आज से पहले मा'ना मा'लूम नहीं थे तो चलिये अब पता चल गया लिहाज़ा अपने रब्बे करीम से किये जाने वाले रोज़ रोज़ के इस वा'दे को अब अ़मली जामा पहना ही दीजिये और नमाज़ न पढ़ने वालों, गालियों, बद गुमानियों, तोहमतों, **ग़ीबतों,** चुग़्लियों और त़रह़ त़रह़ से ना फ़रमानियों में मुलव्वस रहने वालों फ़ासिक़ों और फ़ाजिरों की बैठकों और उन की सोह़बतों से तौबा कर लीजिये। और क़ुरआने करीम भी ऐसों की सोह़बत से मन्अ़ फ़रमाता है, जैसा कि पारह 7 **सूरतुल अन्आ़म** आयत नम्बर 68 में इर्शाद होता है : ﴿وَ اِمَّا یُنْسِیَنَّكَ الشَّیْطٰنُ فَلَا تَقْعُدْ بَعْدَ الذِّكْرٰى مَعَ الْقَوْمِ الظّٰلِمِیْنَ﴾ **तरजमए कन्ज़ुल ईमान :** और जो कहीं तुझे शैत़ान भुलावे तो याद आए पर ज़ालिमों के पास न बैठ।

तफ़्सीराते अह़मदिय्या में इस आयते मुबारका के तह़्त लिखा है : यहां ज़ालिमीन से मुराद काफ़िरीन, मुब्तदिईन या'नी गुमराह व बद दीन और फ़ासिक़ीन हैं। (تفسیرات احمدیہ ص۳۸۸)

नेकी की दा'वत देने के लिये फ़ासिक़ों के पास जाना जाइज़ है

जो इस्लामी भाई मुत्तक़ी परहेज़ गार हो, वोह यारी दोस्ती में नहीं बल्कि सिर्फ़ नेकी की दा'वत की ह़द तक ना फ़रमानों और बिगड़े हुए

लोगों के साथ बैठ सकता है चुनान्चे पारह 7 **सूरतुल अन्आ़म** आयत नम्बर 69 में रब्बुल इ़बाद इर्शाद फ़रमाता है :

وَ مَا عَلَى الَّذِیْنَ یَتَّقُوْنَ مِنْ حِسَابِهِمْ مِّنْ شَیْءٍ وَّ لٰكِنْ ذِكْرٰى لَعَلَّهُمْ یَتَّقُوْنَ ﴿۶۹﴾ (پ7، الانعام:69)

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और परहेज़ गारों पर उन के हि़साब से कुछ नहीं, हां नसीह़त देना शायद वोह बाज़ आएं।

सदरुल अफ़ाज़िल मौलाना सय्यिद मुह़म्मद नई़मुद्दीन मुरादआबादी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه **ख़ज़ाइनुल इ़रफ़ान** में इस आयते करीमा के तह़्त फ़रमाते हैं : इस आयत से मा'लूम हुवा कि पन्दो नसीह़त और इज़्हारे ह़क़ के लिये इन के पास बैठना जाइज़ है।

ह़ज्जाज बिन यूसुफ़ की ग़ीबत से भी परहेज़

हमारे बुज़ुर्गाने दीन رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِم को **ग़ीबत** के मुआ़मले में **अल्लाह** करीम का इस क़दर डर रहता था कि जिन के ज़ुल्मो सितम की दास्तानें मश्हूरो मा'रूफ़ होतीं उन का भी बिला ज़रूरते शर्ई तज़्किरा करने से बचते थे जैसा कि ह़ज़रते अ़ल्लामा इस्माईल ह़क़्क़ी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه नक़्ल करते हैं : **ह़ज़रते** इमाम मुह़म्मद इब्ने सीरीन رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه से अ़र्ज़ की गई : क्या बात है कि आप ने कभी भी ह़ज्जाज (बिन यूसुफ़) के बारे में दो लफ़्ज़ नहीं बोले ! (या'नी उसे बुरा भला नहीं कहा) फ़रमाया : "मैं (**अल्लाह** पाक की ख़ुफ़्या तदबीर से) डरता हूं, कहीं ऐसा न हो कि क़ियामत के दिन **अल्लाह** पाक तौह़ीद की बरकत से उसे तो छोड़ दे (या'नी चूंकि वोह मुसल्मान था लिहाज़ा इस निस्बत के सबब अपने फ़ज़्लो करम से उसे बे हि़साब बख़्श दे) और मुझे उस की ग़ीबत करने की वज्ह से अ़ज़ाब में मुब्तला फ़रमा दे।"

(تفسیر روحُ البیان ج۹ ص ۹۰)

तीन उ़यूब की नुहूसत की इ़ब्रतनाक ह़िकायत

ऐ आ़शिक़ाने रसूल ! **अल्लाह** पाक बे नियाज़ है, उस की **ख़ुफ़्या तदबीर** किस के बारे में क्या है वोह कोई नहीं जानता, लिहाज़ा कोई मुसल्मान ख़्वाह कितना ही बड़ा गुनहगार हो उस के बारे में हम येह नहीं कह सकते कि येह ज़रूर ही जहन्नम में जाएगा, जब उस की तदबीर ग़ालिब आती है तो बड़े बड़ों की वोह पकड़ हो जाती है कि اَلْاَمَان وَ الْحَفِيظ! । आ़शिकाने रसूल की मदनी तह़रीक **दा'वते इस्लामी** के मक्तबतुल मदीना के रिसाला **"बुरे ख़ातिमे के अस्बाब"** (31 सफ़ह़ात) सफ़ह़ा 5 पर है : "मिन्हाजुल आ़बिदीन" में है : ह़ज़रते **फ़ुज़ैल बिन इ़याज़** رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه अपने एक शागिर्द की नज़्अ़ के वक़्त तशरीफ़ लाए और उस के पास बैठ कर **सूरए यासीन** शरीफ़ पढ़ने लगे। तो उस शागिर्द ने कहा : **"सूरए यासीन पढ़ना बन्द कर दो ।"** फिर आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने उसे कलिमा शरीफ़ की तल्क़ीन[1] फ़रमाई । वोह बोला : **"मैं हरगिज़ येह कलिमा नहीं पढ़ूंगा मैं इस से बेज़ार हूं ।" बस इन्हीं अल्फ़ाज़ पर उस की मौत वाक़ेअ़ हो गई ।** ह़ज़रते फ़ुज़ैल رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه को अपने शागिर्द के बुरे ख़ातिमे का सख़्त सदमा हुवा। चालीस 40 रोज़ तक अपने घर में बैठे रोते रहे । चालीस दिन के बा'द आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने **ख़्वाब** में देखा कि फ़िरिश्ते उस शागिर्द को जहन्नम में घसीट रहे हैं। आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने उस से पूछा : किस सबब से **अल्लाह** पाक ने तेरी मा'रिफ़त सल्ब फ़रमा ली ?

---

1. मरने वाले को येह न कहा जाए कि कलिमा पढ़ बल्कि तल्क़ीन का सह़ीह़ त़रीक़ा येह है कि सक्रात वाले के पास बुलन्द आवाज़ से कलिमा शरीफ़ का विर्द किया जाए ताकि उसे भी याद आ जाए।

मेरे शागिर्दों में तेरा मक़ाम तो बहुत ऊंचा था ! उस ने जवाब दिया : **तीन ऊ़यूब** के सबब से : (1) **चुग़ली** (2) **ह़सद** (3) **शराब नोशी** कि एक बीमारी से शिफ़ा पाने की ग़रज़ से त़बीब के मश्वरे पर हर साल शराब का एक गिलास पीता था। (منہاج العابدین، ص151 بتغیر قلیل)

नज़्अ़ में कुफ़्र बकने का शर्ई मस्अला

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! ख़ौफ़े ख़ुदा से लरज़ उठिये ! और घबरा कर अपने मा'बूदे बरह़क़ को राज़ी करने के लिये उस की बारगाहे बेकस पनाह में झुक जाइये। आह ! **चुग़ली, ह़सद** और **शराब नोशी** के सबब वलिय्ये कामिल का शागिर्द कुफ़्रिय्या कलिमात बोल कर मरा। यहां एक ज़रूरी मस्अला समझ लीजिये चुनान्चे **सदरुश्शरीअ़ह, बदरुत्त़रीक़ह** ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : मरते वक़्त مَعَاذَ الله उस की ज़बान से कलिमए कुफ़्र निकला तो कुफ़्र का हुक्म न देंगे कि मुम्किन है मौत की सख़्ती में अ़क़्ल जाती रही हो और बेहोशी में येह कलिमा निकल गया।

(बहारे शरीअ़त, 1/809, ह़िस्सा : 4, (دُرِّمُختار ج۳ ص۹۶

अक्सर ख़त़ाएं ज़बान से होती हैं

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! वाक़ेई ग़लत़ चलने वाली ज़बान इन्सान को बहुत परेशान करती है, इन्सान इसी ज़बान से गालियां निकाल कर, झूट बोल कर, **ग़ीबतें** कर के चुग़लियां खा कर अपनी आख़िरत को दाव पर लगाता है। इस ज़बान की आफ़तों से **अल्लाह** पाक की पनाह ! मश्हूर सह़ाबी ह़ज़रते **अ़ब्दुल्लाह** बिन मस्ऊ़द رَضِیَ اللهُ عَنْه से रिवायत है कि ह़ुज़ूरे अकरम صَلَّی اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : इन्सान की अक्सर ख़त़ाएं उस की ज़बान से होती हैं। (معجم کبیر، 10/197، حدیث:10446)

रोज़ाना सुब्ह आ'ज़ा ज़बान की ख़ुशामद करते हैं

ह़ज़रते अबू सईद ख़ुदरी رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہ से रिवायत है : जब इन्सान सुब्ह करता है तो उस के तमाम आ'ज़ा **ज़बान** के सामने आ़जिज़ाना येह कहते हैं : हमारे बारे में **अल्लाह** पाक से डर ! क्यूं कि हम तुझ से वाबस्ता हैं अगर तू सीधी रहेगी तो हम सीधे रहेंगे अगर तू टेढ़ी होगी तो हम भी टेढ़े हों।

(ترمذی، 4/183، حدیث:2415)

जो दिल में होता है वोही ज़बान पर आता है

मशहूर **मुफ़स्सिरे** क़ुरआन **ह़कीमुल उम्मत** ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान رَحۡمَۃُ اللّٰہِ عَلَیۡہ इस ह़दीसे पाक के तह़्त फ़रमाते हैं : नफ़्अ़ व नुक़्सान, राह़त व आराम, तकालीफ़ व आलाम में (ऐ ज़बान !) हम तेरे साथ वाबस्ता हैं अगर तू ख़राब होगी हमारी शामत आ जावेगी तू दुरुस्त होगी हमारी इ़ज़्ज़त होगी। ख़याल रहे कि **ज़बान** दिल की तरजुमान है इस की अच्छाई बुराई दिल की अच्छाई बुराई का पता देती है।

(मिरआतुल मनाजीह़, 6/465)

ज़बान की बे एह़तियाती की आफ़तें

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! वाक़ेई ज़बान अगर टेढ़ी चलती है तो बा'ज़ अवक़ात फ़सादात बरपा हो जाते हैं, इसी **ज़बान** से अगर मर्द अपनी बीवी को त़लाक़ कह दे तो (कई सूरतों में) **त़लाक़े मुग़ल्लज़ा** वाक़ेअ़ हो जाती है, इसी **ज़बान** से अगर किसी को बुरा भला कहा और उस को त़ैश (या'नी ग़ुस्सा) आ गया तो बा'ज़ अवक़ात क़त्लो ग़ारत गरी तक नौबत पहुंच जाती है। इसी **ज़बान** से अगर किसी मुसल्मान को बिला इजाज़ते शर्ई़ डांट दिया और उस की दिल आज़ारी कर दी तो यक़ीनन

इस में गुनहगारी और जहन्नम की हक़दारी है। "**तबरानी शरीफ़**" की रिवायत में है, **सरकारे मदीना** صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इब्रत निशान है : जिस ने (बिला वज्हे शरई) किसी मुसल्मान को ईज़ा दी उस ने मुझे ईज़ा दी और जिस ने मुझे ईज़ा दी उस ने **अल्लाह** पाक को ईज़ा दी।

(معجم اوسط، 2/386، حدیث:3607)

हमेशा की रिज़ा व नाराज़ी

हज़रते बिलाल बिन हारिस رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه रिवायत करते हैं, सुल्ताने दो जहान صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने हक़ीक़त निशान है : कोई शख़्स अच्छी बात बोल देता है उस की इन्तिहा नहीं जानता इस की वज्ह से उस के लिये **अल्लाह** पाक की रिज़ा उस दिन तक के लिये लिखी जाती है जब वोह उस से मिलेगा। और एक आदमी बुरी बात बोल देता है जिस की इन्तिहा नहीं जानता **अल्लाह** पाक इस की वज्ह से अपनी नाराज़ी उस दिन तक लिख देता है जब वोह उस से मिलेगा।

(ترمذی، 4/143، حدیث:2326)

पहले तोलो फिर मुंह से बोलो

मशहूर **मुफ़स्सिरे** क़ुरआन **हकीमुल उम्मत** हज़रते मुफ़्ती अहमद यार ख़ान رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه इस हदीसे पाक के तहत फ़रमाते हैं : (बा'ज़ अवक़ात आदमी) कोई बात ऐसी बुरी बोल देता है जिस से रब्बे करीम हमेशा के लिये नाराज़ हो जाता है लिहाज़ा इन्सान को चाहिये कि बहुत सोच समझ कर बात किया करे। **हज़रते अल्क़मा** (رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه) फ़रमाया करते थे कि मुझे बहुत सी बातों से बिलाल इब्ने हारिस (رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه) की (मज़्कूरा) हदीस रोक देती है। (مرقات) या'नी मैं कुछ बोलना चाहता हूं कि येह हदीस सामने आ जाती है और मैं (इस ख़ौफ़ से) ख़ामोश हो जाता हूं (कि कहीं ऐसी

बात मुंह से न निकल जाए जिस की वज्ह से **अल्लाह** करीम हमेशा के लिये मुझ से नाराज़ हो जाए) । (मिरआतुल मनाजीह़, 6/462)

कुफ़्ले मदीना लगाने ही में आ़फ़िय्यत है

ऐ आ़शिक़ाने रसूल ! बे सोचे समझे बोल पड़ना बेह़द ख़त़रनाक नताइज का ह़ामिल हो सकता और **अल्लाह** पाक की हमेशा हमेशा की **नाराज़ी** का बाइ़स बन सकता है । यक़ीनन **ज़बान का कुफ़्ले मदीना** लगाने या'नी अपने आप को ग़ैर ज़रूरी बातों से बचाने ही में आ़फ़िय्यत है । ख़ामोशी की आ़दत डालने के लिये कुछ न कुछ गुफ़्त्गू लिख कर या इशारे से कर लिया करना बेह़द मुफ़ीद है क्यूं कि जो ज़ियादा बोलता है उ़मूमन ख़त़ाएं भी ज़ियादा करता है, राज़ भी फ़ाश कर डालता है । **ग़ीबत** व चुग़ली और ऐ़बजूई जैसे गुनाहों से बचना भी ऐसे शख़्स के लिये बहुत दुश्वार होता है बल्कि बक बक का आ़दी बा'ज़ अवक़ात مَعَاذَاللّٰه कुफ़्रिय्यात भी बक डालता है !

दिल की सख़्ती का अन्जाम

अल्लाहु रह़मान हम पर रह़्म फ़रमाए और हमारी ज़बान को लगाम नसीब करे कि येह **ज़िक्रुल्लाह** से ग़ाफ़िल रह कर फ़ुज़ूल बोल बोल कर दिल को भी सख़्त कर देती है । **अल्लाहु ग़नी** के प्यारे नबी मक्की मदनी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है : फ़ोह़्श गोई सख़्त दिली से है और सख़्त दिली आग में है । (ترمذی،3/406،حدیث:2016ملتقطاً)

बक बक की आ़दत कुफ़्र में डाल सकती है

मशहूर **मुफ़स्सिरे** क़ुरआन **ह़कीमुल उम्मत** ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान رَحْمَۃُ اللّٰهِ عَلَيْه इस ह़दीसे पाक के तह़्त फ़रमाते हैं : या'नी जो शख़्स

ज़बान का बेबाक हो कि हर बुरी भली बात बे धड़क मुंह से निकाल दे तो समझ लो कि **उस का दिल सख़्त है** उस में **ह़या** नहीं। **सख़्ती** वोह दरख़्त है जिस की जड़ इन्सान के दिल में है और इस की शाख़ दोज़ख़ में। ऐसे बे धड़क इन्सान का अन्जाम येह होता है कि वोह **अल्लाह रसूल** की बारगाह में भी बे अदब हो कर **काफ़िर** हो जाता है।

(मिरआतुल मनाजीह़, 6/641)

जी चाहता है फूट के रोऊं तेरे ग़म में सरकार ! मगर दिल की क़सावत नहीं जाती

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

تُوبُوا اِلَى اللّٰه! اَسْتَغْفِرُاللّٰه

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

फ़ेह़रिस

ग़ीबत नेकियों को जला देती है 1
क़ियामत में एक एक लफ़्ज़ का ह़िसाब होगा 2
जिस की ग़ीबत की जाए वोह फ़ाएदे में 3
मेरी मां मेरी नेकियों की ज़ियादा ह़क़दार है 3
आधे गुनाह मुआ़फ़ 4
100 बरस की नफ़्ली इ़बादत और एक ग़ीबत.....5
ह़ाजत रवाई और बीमार पुर्सी की फ़ज़ीलत.....5
ग़ीबत सुनना भी ह़राम है 7
ग़ीबत में शिर्कत के तमाम अन्दाज़ गुनाह हैं 7
बादशाह की सड़ी हुई लाश.....8
सियासी तब्सिरों की बैठकें 9
अख़्बारी ख़बरों का ह़ाल बे ह़ाल.....10
दुआ़ए क़ुनूत पढ़ने वाले अपना वा'दा निभाएं 11
ह़ज्जाज बिन यूसुफ़ की ग़ीबत से भी परहेज़ 13
तीन उ़यूब की नुहूसत की इ़ब्रतनाक ह़िकायत 14
नज़्अ़ में कुफ़्र बकने का शर्ई मस्अला.....15
अक्सर ख़ताएं ज़बान से होती हैं.....15
जो दिल में होता है वोही ज़बान पर आता है 16
हमेशा की रिज़ा व नाराज़ी 17
बक बक की आ़दत कुफ़्र में डाल सकती है 18

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

फ़रमाने
अमीरे अहले सुन्नत دامت برکاتہم العالیہ

जब भी बोलें अच्छा बोलें
कि मीठे बोल में एसा जादू है
कि ना फ़रमान व बाग़ी,
इताअ़त गुज़ार हो जाते हैं।

(मदनी मुज़ाकरा, 4 रबीउ़ल आख़िर 1436 हि.)

978-969-722-049-6
01082195

فیضانِ مدینہ، محلہ سوداگران، پرانی سبزی منڈی کراچی
UAN +92 21 111 25 26 92 0313-1139278
www.maktabatulmadinah.com / www.dawateislami.net
feedback@maktabatulmadinah.com / ilmia@dawateislami.net